मृत्यु जैसा कुछ नहीं

मृत्यु मरनेवाले का शब्द नहीं, जीने वालों का है,
क्या हम कही जाने के लिए निकले और पहोचने के बाद हम मर जाते है? क्या हम अपने आपको मरा हुवा कहेंगे? हम हिमालय जाने के लिए निकले और हिमालय पहोचने के बाद क्या हम कहेंगे की में मर गया, नहीं ना....हम कहेंगे में पहोच गया, वैसे जब शरीर छूट जाता है... शब्द कहने वाला छूट गया...शब्द सारे बुद्धि के है, और बुद्धि शरीर का हिस्सा है, तो कोई शब्द नहीं है, कोई मृत्यु नहीं है, पर दूसरे लोग जो शरीर के छूटेने की घटना को देखते है वो इस घटना को मृत्यु कहते है, क्योंकि इंसान ने सारी घटनाओं के नाम दिए है, जैसे कोई चल रहा है तो उसे देखने वाले ने नाम दिया की वो 'जा' रहा है, जिसके साथ शरीर छूटने की घटना बनती है उन्हें हम पूछे तो पता चले...कोई चल रहा है उसे हम पूछे की तुम जा रहे हो ना? तो वो कह सकता है नहीं...आप पागल हो क्या? में तो 'आ' रहा हु, आप अपनी ज़बान संभालके बात करो, किसने कहा की में जा रहा हु? में तो ऑफ़िस गया था...अब में आ रहा हु, बड़ा सुकून मिला है, में थका हुवा हु और सोच रहा था घर पर जाकर आराम करूँगा, और आपने वापस जाने की बात की...जाना याद दिला दिया,

इसलिए जिसका शरीर छूट गया, जो शरीर के रहते भी शरीर से मुक्त हो गए, जिन्होंने मृत्यु को जान लिया, उन्हें पता चला की मृत्यु है ही नहीं, इसलिए ऐसे पुरुष (जीव) को उनके शिष्य ने पूछा होगा कि...हे पुरुषोत्तम, जब आप भक्तों और शिष्यों पर कृपा करने और धर्म की पुनः स्थापना करने के लिए शरीर रूप धारण करोगे और जब वापस अपने दिव्य शरीर को अद्रश्य कर दोगे तो हम इस प्रक्रिया को क्या कहेंगे? तब 'वह' बुद्ध ने कहा होगा कि आप "परमगति" शब्द इस्तेमाल कर सकते है, "निर्वाण" शब्द इस्तेमाल कर सकते है, और दूसरा की आप जब कोई चल रहा हो तो 'उन्हें नहीं पूछना की आप कहा जा रहे हो' , ऐसा आदेश "वह" बुद्ध पुरुष ने बाक़ी सारे लोगों को दिया, तब उनके शिष्य ने पूछा की ऐसा क्यों प्रभु? तो वह 'एक मात्र' ने कहा की ऐसा करने से सारे लोगों के बिचमे एक बात ज़िंदा रहेगी की मृत्यु शब्द सबके लिए इस्तेमाल ना करे, **जिस पर भी मेरी कृपा होगी उनसे निर्वाण के लिए प्रयास होगा**, और वो मृत्यु को जान सकता है, इस बात को कई शतक बीत गए, और जिन लोगों को कहा था जब कोई चल रहा हो 'उन्हें नहीं पूछना की आप कहा जा रहे हो' यह बात का सत्य लुप्त हो गया, सिर्फ़ शब्द रह गए, पहले लोग जब उन्हें अपने बच्चे पूछते थे, की क्यों हमें कोई चल रहे इंसान को नहीं पूछ ना है की वो कहा जा रहा है, तब उसे समजाया जाता था की भगवानने ऐसा कहा है कि जिस पर भी उनकी कृपा होगी उनसे निर्वाण के लिए प्रयास होगा, पर समय बीतता गया और सही बात ग़ायब हो गईं, और लोग अपने अपने अर्थ जोड़ने लगे, बाद में ऐसा हुवा की एक बार बच्चे चोराहे पर खेल रहे थे, तब एक इंसान चलता हुवा निकला, तो एक बच्चे को यह बात समजमे नहीं आ रही थी जो उनके पिताजी ने बतायी थी... की कोई कही जा रहा हो तो 'उन्हें नहीं पूछना की आप कहा जा रहे हो' वो बच्चे ने प्रयोग करने की थानी, की में देखू उन्हें जैसा बताया गया है वो ठीक है की नहीं, में ख़ुद देखू क्या होता है, तब उस बच्चे ने चलते हुवे आदमी को पूछा आप कहा जा रहे हो? तो बाक़ी बच्चे उन्हें एसा नहीं पूछना चाहिए उसके लिए अलग-अलग कारण देने लगे, और सारे बच्चे अपने पिताजी को पूछने लगे की बाक़ी बच्चे अलग बात क्यों कह रहे है? आपने मुजे बताया ऐसा क्यूँ नहीं कह रहे है? तब किसी के भी पिता के पास और कोई जवाब न था, सारे बच्चे को उनके पिताजी ने कहा की उन्होंने जो बताया वही सच है दूसरे बच्चे जुठ बोल रहे है, तब इस बात को लेकर बहस होनी चालू हो गई, सारे बच्चे अपने पिताजी ने कही बात सच साबित करने के लिए ज़घड़ने लगे, तो मामला सुलजाने के लिए

सारे गाँव वाले एक़ट्टा हुवे, सरपंच को बुलाया और सारे मामले के बारे में बताया…कि ऐसा है, इसका क्या करे? तो सरपंच ने हल निकाला, उसने सारे बच्चे को बुलाया और कहा की " चलते हुवे इंसान को पूछना की वो कहा जा रहा है " एसा करने से अपशकुन होता है, और तब से यह बात चली आ रही है…

पर अब वापस "उसने" सही बात याद दिलाई है, "वह" बहोत दयालु है…….

मृत्यु जैसा कुछ नहीं

part 2

….जब हमारे पास कोई जवाब ना हो तो हम कहते है की अपशकुन होता है, पर हक़ीक़त में ऐसा इसलिए कहते है क्योंकि तब हमारे पास कोई दूसरा जवाब ना हो…जब हम सही बात तक पहोचना ना चाहते हो… बात को टालना चाहते हो, पर ऐसा होता नहीं है…बात टलती नहीं है… जो है वो है…हम चाँद को देखे या ना देखे पर वो है…अगर हम सुबह होने पर उठे या ना उठे पर सुबह तो होगी ही… अगर हम रात होने पर सोए या ना सोए पर रात तो होगी ही…अगर हम कोयल की आवाज़ सुने या ना सुने पर कोयल तो कूँ कूँ करेगी ही, अगर हमारे जीवन में सुवास हो या ना हो पर कही तो गुलाब होगा…..जो सुवास फेलाता होगा….जीवन हर पल आनंद से भरा है…जीवन एक आनंद है, पर हमारे जीवन में डर ही है जो हमें जीवन जीने से रोकता है, और वो डर मृत्यु का है, वो डर जुठ का है, और मृत्यु सबसे बड़ा जुठ है, बाक़ी सारे जुठो का स्रोत मृत्यु ही है, अगर हम जुठ बोलते है तो हमेशा डर रहता है की कही हमारे जुठ की मृत्यु ना हो जाए… हमेशा डर से घेरे रहेंगे, और एक जुठ को ज़िंदा रखने दूसरा जुठ बोलेंगे, फिर तीसरा…फिर चोथा…हम कोशिश करते है की हमारा जुठ "जुठ" बना रहे, पर कभी ना कभी हमारे जुठ की मृत्यु हो ही जाती है, वैसे ही हम जब तक मृत्यु को ना जान ले तब तक मृत्यु होती ही रहेगी, जब तक कोई जान ना ले की मृत्यु जैसा कुछ भी नहीं.

Aasthit